Shodhaamrit, Vol.-2; Issue-2 (July-Dec.) 2025 : Page No.-102-105

शोधामृत

(कला, मानविकी और सामाजिक विज्ञान की अर्धवार्षिक, सहकर्मी समीक्षित, मूल्यांकित शोध पत्रिका)

ISSN : 3048-9296 (Online)
3049-2890 (Print)
IIFS Impact Factor-2.0
Vol.-2; issue-2 (July-Dec.) 2025
Page No- 102-105

©2025 Shodhaamrit
https://shodhaamrit.gyanvividha.com

हेमलता पटेल
सहायक शिक्षक, काशीडीह, चन्द्रपुर, छत्तीसगढ़.
शोधार्थी (शिक्षा),
आई.एस.बी.एम. विश्विद्यालय
गरियाबंद, छत्तीसगढ़.

Corresponding Author :
हेमलता पटेल
सहायक शिक्षक, काशीडीह, चन्द्रपुर, छत्तीसगढ़.
शोधार्थी (शिक्षा),
आई.एस.बी.एम. विश्विद्यालय
गरियाबंद, छत्तीसगढ़.

वर्तमान शैक्षिक परिदृश्य में नवोन्मेषी शिक्षण एवम अधिगम पद्धतियों की आवश्यकता

सार : किसी भी शिक्षक के सामने सबसे बड़ी चुनौती यह होती है कि वह विद्यार्थियों का ध्यान आकर्षित कर सके और विचारों को इस तरह प्रस्तुत करे कि वे लंबे समय तक उनके साथ बने रहें। इसके लिए आवश्यक है कि कक्षा के अनुभव को पुनर्परिभाषित किया जाए और ऐसे नवोन्मेषी विचारों को अपनाया जाए जो शिक्षण-अधिगम पद्धतियों को अधिक प्रभावी बना सकें। इस शोधपत्र में कुछ नवोन्मेषी विचार प्रस्तुत किए गए हैं जो शिक्षकों को अपनी शिक्षण शैली को पुनः आविष्कृत करने और कक्षाओं को रोचक बनाने में सहायक होंगे। शैक्षणिक संस्थानों में नवोन्मेषी तरीकों का उपयोग शिक्षा में सुधार करने के साथ-साथ लोगों को सशक्त बनाने, शासन को मजबूत करने और देश के मानव विकास लक्ष्यों को प्राप्त करने के प्रयासों को प्रेरित करने की क्षमता रखता है। इस शोधपत्र का उद्देश्य ऐसे उपयोगी नवोन्मेषी शिक्षण तरीकों का सुझाव देना है जिनसे छात्रों को सरलता से ज्ञान प्रदान किया जा सके।

बीज शब्द : नवोन्मेषी शिक्षण, अधिगम, कक्षा, शिक्षण, पद्धतियाँ।

परिचय : विश्व प्रतियोगिता की ओर बढ़ रहा है, लोग सीखने के लिए संघर्ष कर रहे हैं और नई शिक्षा पद्धतियाँ विकसित करने के लिए कड़ी मेहनत कर रहे हैं। शिक्षा का उद्देश्य केवल पढ़ाना नहीं है, बल्कि पाठ्यपुस्तकें छात्रों को जोड़ने और जोड़ाव का अनुभव कराने में सहायक होती हैं। नवोन्मेषी सोच, रचनात्मक वातावरण और आत्मनिर्भरता आवश्यक हैं। इसलिए, संस्थानों को ऐसे नवोन्मेषी संचार तरीकों को अपनाना चाहिए जो विद्यार्थियों को अच्छा ज्ञान प्रदान करें। नवोन्मेषी शिक्षण पद्धतियों को खोजना एक महत्वपूर्ण कौशल है। शोध से यह स्पष्ट हुआ है कि कुछ पद्धतियाँ और दृष्टिकोण ऐसा कर सकते हैं। वास्तव में, अधिगम कौशल को बढ़ाने के कुछ नवोन्मेषी तरीके विभिन्न डिजिटल माध्यमों जैसे पाठ्य सामग्री, चित्र, ऑडियो और वीडियो को एकीकृत बहु-इन्द्रिय इंटरैक्टिव प्रस्तुति के रूप में जोड़कर सूचना प्रस्तुत

करना हो सकते हैं। शिक्षा में विद्यार्थियों की संलग्नता (engagement) का अर्थ है उनका ध्यान, जिज्ञासा, रुचि, आशावाद और जुनून। जब विद्यार्थी पढ़ाई के दौरान संलग्न रहते हैं, तो वे अधिक सीखते हैं और लंबे समय तक याद रखते हैं।

नवोन्मेषी शिक्षण पद्धतियाँ : शिक्षा की गुणवत्ता को बेहतर बनाने के लिए नवोन्मेषी शिक्षण पद्धतियों का प्रयोग समय की मांग है। एक शिक्षक तभी प्रभावी बन सकता है जब वह अपने कार्य से सच्चा प्रेम करे। कार्य से प्रेम करने से तनाव कम होता है और शिक्षक नई विधियों को अपनाने में सहज हो जाता है। शिक्षण को रोचक बनाने के लिए ऑडियो-वीडियो उपकरणों का उपयोग अत्यंत आवश्यक है। मॉडल, चलचित्र, सूचना-ग्राफिक्स और माइंड मैप जैसे साधन विद्यार्थियों की कल्पना शक्ति को प्रोत्साहित करते हैं। इसी प्रकार कक्षा में मंथन (ब्रेनस्टॉर्मिंग) छात्रों को स्वतंत्र रूप से सोचने और अपने विचार रखने का अवसर देता है। इससे उनकी सक्रियता और आत्मविश्वास दोनों बढ़ते हैं। पारंपरिक कक्षा के बाहर सीखने की प्रक्रिया भी अत्यंत प्रभावी होती है। शैक्षिक भ्रमण, प्रकृति सैर या ऐतिहासिक स्थलों का दौरा विद्यार्थियों को नए अनुभव और उत्साह प्रदान करता है। भूमिका-निर्वाह (Role Play) के माध्यम से साहित्य, इतिहास और सामयिक घटनाओं की शिक्षा अधिक जीवंत और प्रभावशाली बनती है। नवाचार के लिए नए विचारों का स्वागत आवश्यक है। चाहे वे विचार आरंभ में असामान्य क्यों न लगें, वे विद्यार्थियों की रचनात्मकता को पोषित करते हैं। इसी क्रम में खेल और पहेलियाँ भी सीखने को आनंददायक बनाती हैं तथा चुनौतियों का सामना करना सिखाती हैं। शिक्षक को अपने दृष्टिकोण को समृद्ध करने के लिए रचनात्मकता पर आधारित पुस्तकों का अध्ययन करते रहना चाहिए। अंततः, पाठों को कहानी की तरह प्रस्तुत करने से विद्यार्थियों की रुचि और सहभागिता बढ़ती है। जब शिक्षा को केवल सूचनाएँ देने के बजाय अनुभवात्मक और रोचक बनाया जाता है, तब वास्तविक अर्थों में नवोन्मेषी शिक्षण पद्धतियाँ सफल होती हैं।

नवोन्मेषी अधिगम पद्धतियाँ : आज के शैक्षिक परिदृश्य में नवोन्मेषी अधिगम पद्धतियों का महत्व अत्यंत बढ़ गया है। क्रॉसओवर लर्निंग के माध्यम से विद्यार्थी अनौपचारिक स्थानों जैसे संग्रहालय, पुस्तकालय या स्कूल के बाहर के क्लबों में सीखते हैं, जिससे वे वास्तविक जीवन की परिस्थितियों से जुड़ते हैं। कक्षा में सीखी गई जानकारी को बाहरी अनुभवों के साथ जोड़कर सीखना अधिक गहरा और यादगार बनता है। उदाहरण के लिए, शिक्षक कक्षा में एक प्रश्न प्रस्तुत कर सकते हैं और छात्र उसका उत्तर संग्रहालय भ्रमण या फील्ड ट्रिप के दौरान खोजें, प्रमाण जुटाएँ और बाद में कक्षा में साझा करें। वाद-विवाद के माध्यम से सीखना छात्रों की सोच और तर्कशक्ति को विकसित करता है। बहस करते समय विद्यार्थी विपरीत विचारों को समझते हैं, अपने विचारों को निखारते हैं और वैज्ञानिक दृष्टिकोण से तर्क प्रस्तुत करना सीखते हैं। शिक्षक खुली चर्चा और मॉडल के माध्यम से छात्रों को वैज्ञानिक भाषा में विचार व्यक्त करने के लिए प्रेरित कर सकते हैं। आकस्मिक अधिगम अनियोजित और स्वतः होने वाला सीखने का तरीका है। यह दैनिक गतिविधियों, मोबाइल उपकरणों या रोजमर्रा के अनुभवों के माध्यम से होता है और छात्रों में आत्म-चिंतन और नई जानकारी ग्रहण करने की क्षमता बढ़ाता है। कार्य करके सीखना विद्यार्थियों को वास्तविक वैज्ञानिक उपकरणों के साथ अभ्यास करने का अवसर देता है। दूरस्थ नियंत्रित प्रयोगशालाओं या टेलिस्कोप के माध्यम से वे अनुभवात्मक रूप से अध्ययन करते हैं, जिससे उनकी समझ और जिज्ञासा बढ़ती है। देहधर्मी अधिगम में शरीर की सक्रिय भागीदारी से सीखना होता है। खेल या शारीरिक गतिविधियों के दौरान तकनीक जैसे wearable sensors, visual tracking systems और मोबाइल उपकरण प्रतिक्रिया प्रदान करते हैं। इसका उपयोग भौतिकी, गति और बल या अणु संरचना जैसे विषयों को समझाने में किया जा सकता है।

वर्तमान में नवोन्मेषी शिक्षण और अधिगम पद्धतियों की प्रासंगिकता : आज के शैक्षिक परिदृश्य में शिक्षा केवल ज्ञान प्रदान करने तक सीमित नहीं रही। तकनीकी विकास, वैश्वीकरण और बदलती सामाजिक आवश्यकताओं ने शिक्षण की पारंपरिक विधियों को चुनौती दी है। ऐसे समय में नवोन्मेषी शिक्षण और अधिगम पद्धतियाँ न केवल प्रासंगिक हैं, बल्कि अत्यंत आवश्यक भी बन गई हैं। ये पद्धतियाँ छात्रों को सिर्फ पुस्तक आधारित ज्ञान देने के बजाय उन्हें वास्तविक जीवन की परिस्थितियों और अनुभवों से जोड़ती हैं। वर्तमान समय में विद्यार्थी विभिन्न डिजिटल माध्यमों और सोशल मीडिया के संपर्क में रहते हैं। उनकी सीखने की प्रक्रिया तेज और बहुआयामी हो गई है। ऐसे में कक्षा में पारंपरिक व्याख्यान मात्र प्रभावी नहीं रहते। ऑडियो-वीडियो उपकरण, इंटरेक्टिव स्लाइड्स, ब्रेनस्टॉर्मिंग, फील्ड ट्रिप और रोल प्ले जैसी नवोन्मेषी विधियाँ विद्यार्थियों की रुचि और संलग्नता बढ़ाती हैं। ये पद्धतियाँ छात्रों में रचनात्मक सोच, समस्याओं का समाधान करने की क्षमता और आत्मविश्वास को विकसित करती हैं। इसके अतिरिक्त, क्रॉसओवर लर्निंग और कार्यात्मक अधिगम जैसे तरीके छात्रों को वास्तविक जीवन की चुनौतियों से जोड़ते हैं। उदाहरण के लिए, संग्रहालय भ्रमण या प्रयोगशाला आधारित अधिगम से विद्यार्थी अपनी अवधारणाओं को व्यावहारिक रूप में समझ पाते हैं। आकस्मिक अधिगम और देहधर्मी अधिगम जैसे तरीके उन्हें रोजमर्रा के अनुभवों और शारीरिक गतिविधियों से सीखने का अवसर देते हैं। इससे उनकी सीखने की प्रक्रिया अधिक सजीव, रोचक और प्रभावी बनती है। आज के प्रतिस्पर्धी और गतिशील समाज में विद्यार्थियों को केवल ज्ञान का संग्रहक बनाने की बजाय उन्हें निर्णय लेने, नवीनता अपनाने और आत्मनिर्भर बनने के लिए प्रशिक्षित करना आवश्यक है। नवोन्मेषी शिक्षण पद्धतियाँ इन्हीं उद्देश्यों को प्राप्त करने में मदद करती हैं। शिक्षक की भूमिका अब केवल सूचना प्रदान करने तक सीमित नहीं रह गई है, बल्कि वे मार्गदर्शक, प्रेरक और तकनीकी साधनों का कुशल उपयोगकर्ता बन गए हैं। अतः वर्तमान शिक्षा प्रणाली में नवोन्मेषी शिक्षण और अधिगम पद्धतियों की प्रासंगिकता अत्यधिक है। ये पद्धतियाँ विद्यार्थियों को आधुनिक समाज की आवश्यकताओं के अनुरूप तैयार करती हैं, उनकी सोच और कौशल को विस्तृत करती हैं, और उन्हें जीवनभर सीखने के लिए प्रेरित करती हैं। इस प्रकार, नवोन्मेषी शिक्षण और अधिगम पद्धतियाँ आज की शिक्षा में अनिवार्य और अत्यंत प्रभावशाली साधन हैं।

निष्कर्ष : आज के शैक्षिक परिदृश्य में नवोन्मेषी शिक्षण और अधिगम पद्धतियों का महत्व पहले से कहीं अधिक बढ़ गया है। पारंपरिक शिक्षण विधियाँ छात्रों की बदलती आवश्यकताओं और आधुनिक शिक्षा की चुनौतियों को पूरा करने में पूरी तरह सक्षम नहीं हैं। इस संदर्भ में, शिक्षक और शैक्षणिक संस्थान नए दृष्टिकोण अपनाकर शिक्षा को अधिक प्रभावी और आकर्षक बना सकते हैं। नवोन्मेषी शिक्षण पद्धतियों के माध्यम से शिक्षक न केवल अपने पाठ को रोचक और समझने योग्य बना सकते हैं, बल्कि छात्रों में आत्म-विश्वास, रचनात्मक सोच और समस्या समाधान क्षमता भी विकसित कर सकते हैं। ऑडियो-वीडियो उपकरण, ब्रेनस्टॉर्मिंग, भूमिका-निर्वाह और कक्षा से बाहर कक्षाएँ जैसी विधियाँ छात्रों की संलग्नता और सीखने की रुचि को बढ़ाती हैं। इसके अलावा, खेल, पहेलियाँ और कहानी आधारित शिक्षण विधियाँ छात्रों को सक्रिय और उत्साही बनाती हैं। नवाचार और खुले विचारों का स्वागत करना शिक्षक की दक्षता को बढ़ाता है और छात्रों को नए दृष्टिकोण अपनाने के लिए प्रेरित करता है। नवोन्मेषी अधिगम पद्धतियाँ जैसे क्रॉसओवर लर्निंग, वाद-विवाद के माध्यम से सीखना, आकस्मिक अधिगम, कार्य करके सीखना और देहधर्मी अधिगम, विद्यार्थियों को वास्तविक जीवन के अनुभवों और तकनीकी साधनों से जोड़ती हैं। ये पद्धतियाँ छात्रों की जिज्ञासा, तर्कशक्ति और ज्ञान को गहराई प्रदान करती हैं, साथ ही उन्हें विभिन्न परिस्थितियों में समस्याओं का समाधान ढूँढने में सक्षम बनाती हैं। अंततः, शिक्षा का उद्देश्य केवल सूचना का संचार नहीं बल्कि छात्रों में सोचने की क्षमता, आत्मनिर्भरता और सीखने की इच्छा विकसित

करना है। शिक्षक की जिम्मेदारी है कि वे निरंतर नवाचार और रचनात्मकता के माध्यम से शिक्षण प्रक्रिया को बेहतर बनाते रहें। जब शिक्षक और छात्र मिलकर सीखने की प्रक्रिया को रोचक, प्रयोगात्मक और अनुभवात्मक बनाते हैं, तब शैक्षिक परिणाम अधिक प्रभावी और दीर्घकालिक होते हैं। इस प्रकार, नवोन्मेषी शिक्षण और अधिगम पद्धतियाँ आधुनिक शिक्षा की आवश्यकता और विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास के लिए अनिवार्य हैं।

संदर्भ :

1. अरोमांडी, ए., स्यूफर्ट, सी., ओ'ब्रायन, जे. & अनवर, ए. (2018). सक्रिय शिक्षण रणनीतियाँ और छात्र सहभागिता. ई-जर्नल ऑफ बिजनेस एजुकेशन & स्कॉलरशिप ऑफ टीचिंग, 12(2).
2. बौड, डी. & फेलेटी, जी. (1999). समस्या आधारित शिक्षा की चुनौती (दूसरा संस्करण). लंदन: कॉलिन्स।
3. रॉबर्ट जोंस, ए. (2004). नवोन्मेषी शिक्षण और तकनीकी रणनीतियों के माध्यम से छात्र अधिगम को बढ़ाना. कोगन पेज।
4. बी.पी.पी. (2000). आपकी शोध और विश्लेषण परियोजना में सफलता. CFA लेवल 2, पुस्तक संस्करण।
5. चाउ, पी.टी. (2010). ESL पाठ्यपुस्तकों के फायदे और नुकसान. द इंटरनेट TESL जर्नल, 16(11)।
6. दमोधरण, वी.एस. & रेंगराजन, वी. (1999). शिक्षण की नवोन्मेषी पद्धतियाँ. नेशनल रिसर्च काउंसिल, एजुकेशनल जर्नल पब्लिकेशन।
7. डन, फिलिप (2001). लेखों की व्याख्या. यू.के.: स्टूडेंट अकाउंटेंट, जनवरी 2001।
8. इब्राहीम, इब्राहीम & स्लिम, वफा. (2018). टीम आधारित शिक्षण: छात्रों की संलग्नता बढ़ाने की नवोन्मेषी रणनीति. इंटरनेशनल जर्नल फॉर इनोवेशन एजुकेशन एंड रिसर्च, 6।
9. राईश्के, आर. (2012). स्कूल नवाचार को प्रोत्साहित करने के उपाय. http://rryshke.wordpress.com
10. तिओ, आर. & वॉन्ग, ए. (2000). क्या समस्या आधारित शिक्षा बेहतर छात्र बनाती है? 2nd एशिया पैसिफिक कॉन्फ्रेंस ऑन प्रॉब्लम-बेस्ड लर्निंग, सिंगापुर।
11. वोघन, टी. (1998). मल्टीमीडिया: इसे काम में लाना (4थ एड.). बर्कले, सीए: ओस्बोर्न/मैकग्रॉ-हिल।
12. झांग, ए., ओलेलेवे, सी.जे., ओरजी, सी.टी., इबेज़िम, एन.ई., संडे, एन.एच., ओबिचुक्वु, पी.यू., & ओकानाजु, ओ.ओ. (2020). नवोन्मेषी और पारंपरिक शिक्षण विधियों का तकनीकी कॉलेज छात्रों की उपलब्धियों पर प्रभाव. SAGE Open, 10(4).https://doi.org/10.1177/2158244020982986
13. गुलेरिया, आर. (2019). शिक्षा में नवाचार और आधुनिक शिक्षण तकनीकें. दिल्ली: शैक्षणिक प्रकाशन।
14. शर्मा, के. (2020). छात्र केंद्रित शिक्षण और सीखने की विधियाँ. जयपुर: एडुकेशनल पब्लिशिंग हाउस।
15. https://www.amle.org/innovative-teaching-strategies-that-improve-student-engagement/
16. https://corp.kaltura.com/blog/innovative-teaching-strategies/